Tatva charcha
Ek Shuruvaat

श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजन

रचयिता - पं. द्यानतरायजी कृत

प्रस्तुति - तत्त्वचर्चा

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

स्थापना

(दोहा)

दीप अढ़ाई मेरु पन, अरु तीर्थंकर बीस।
तिन सबकी पूजा करुं, मन-वच-तन धरि शीस।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थङ्कराः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र वंद्य, पद निर्मल धारी।
शोभनीक संसार, सारगुण हैं अविकारी।।
क्षीरोदधि सम नीर सों (हो), पूजौं तृषा निवार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण जहाज श्री महाराज हो।।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधर-युगमन्धर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनन्तवीर्य-सूरिप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चंद्रानन-भद्रबाहु-भुजंगम्-ईश्वर- नेमिप्रभ-वीरषेण-महाभद्र देवयशोऽजितवीर्येतिविद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये।
तिनको साता दाता, शीतल वचन सुहाये।।
बावन चंदन सों जजूं, (हो) भ्रमन-तपन निरवार।।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण जहाज श्री महाराज हो।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यः भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्व. स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

यह संसार अपार महासागर जिनस्वामी।
तातैं तारे बड़ी, भक्ति-नौका जगनामी।।
तन्दुल अमल सुगंध सों (हो) पूजौं तुम गुणसार।।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मंझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण जहाज श्री महाराज हो।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्योऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि. स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

भविक-सरोज-विकास, निंद्य-तम-हर रवि से हो।
जाति-श्रावक-अचार कथन को तुम ही बड़े हो।।
फूल सुवास अनेक सों (हो) पूजौं मदन प्रहार।।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

काम नाग विषधाम, नाशको गरुड़ कहे हो।
क्षुधा महादव-ज्वाल, तासको मेघ लहे हो।।
नेवज बहुघृत मिष्ट सों (हो), पूजौं भूख विडार।।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

उद्यम होन न देत, सर्व जग मांहिं भर्यो है।
मोह महातम घोर, नाश परकाश कर्यो है।।
पूजौं दीप प्रकाश सों (हो) ज्ञान ज्योति करतार।।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वापामिति स्वाहा॥

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

कर्म आठ सब काठ, भार विस्तार निहारा।
ध्यान अग्नि कर प्रकट सरब कीनो निरवारा।।
धूप अनूपम खेवतें (हो) दुःख जलै निरधार।।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

मिथ्यावादी दुष्ट लोभऽहंकारी भरे हैं।
सब को छिन में जीत, जैन के मेरु खड़े हैं।।
फल अति उत्तम सों जजौं (हो) वांछित फलदार।।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जल फल आठों दर्व, अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्रनी हू तैं थुति पूरी न करी है।।
'द्यानत' सेवक जानके (हो) जगतैं लेहु निकार।।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो, भव तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

जयमाला

(सोरठा)

ज्ञान सुधाकर चंद, भविक खेत हित मेघ हो ।
भ्रम-तम-भान अमंद, तीर्थंकर बीसों नमौं ।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(चौपाई)

सीमंधर सीमंधर स्वामी, जुगमंधर जुगमंधर नामी ।
बाहु बाहु जिन जग जन तारे, करम सुबाहु बाहुबल धारे ।।
जात सुजात केवलज्ञानं, स्वयंप्रभ प्रभु स्वयं प्रधानं ।
ऋषभानन ऋषि भानन दोषं, अनंतवीरज वीरजकोषं ।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha

GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(चौपाई)

सौरीप्रभ सौरीगुणमालं, सुगुण विशाल विशाल दयालं।
व्रजधार भवगिरि वज्जर हैं, चंद्रानन चंद्रानन वर हैं।।
भद्रबाहु भद्रनि के करता, श्रीभुजंग भुजंगम हरता।
ईश्वर सब के ईश्वर छाजैं, नेमिप्रभ जस नेमि विराजैं।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(चौपाई)

वीरसेन वीरं जग जाने, महाभद्र महाभद्र बखाने।
नमौं जसोधर जसधरकारी, नमौं अजित वीरज बलधारी।।
धनुष पांचसौ काय विराजै, आयु कोडि पूरब सब छाजै।
समवशरण शोभित जिनराजा, भव-जल-तारनतरन जिहाजा।।

Tatva charcha
Ek Shuruvaat
/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

(चौपाई)

सम्यकरत्नत्रय निधिदानी,
लोकालोकप्रकाशक ज्ञानी।
शतइन्द्रनिकर वंदित सोहैं,
सुन नर पशु सबके मन मोहैं।।

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा |

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha

Tatva charcha
Ek Shuruvaat

(दोहा)

तुमको पूजैं, वंदना, करैं, धन्य नर सोय।
द्यानत सरधा मन धरै, सो भी धरमी होय।।

(पुष्पांजली क्षिपेत)

/Tatvacharcha
GET IT ON Google Play /Tatvacharcha